



जैन पुराणों में माता का स्थान

डॉ० बिमलेश राम

बहादुरपुर, बगवाँ, भोजपुर, बिहार

Article Info: (Received- 12/05/2026, Accepted- 05/06/2026, Published- 10/07/2026)

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i7001

जैन पुराणों में माता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। पुत्र को जन्म देने से स्त्री का मान बढ़ जाता है और लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, वैदिक कालीन पिता दस पुत्रों की कामना करते हैं। स्मृति काल में यही पिता आठ पुत्रों की कामना करता है। मनु के मतानुसार माता का स्थान पिता की अपेक्षा सहस्र गुणा उच्चतर है। यही कारण है कि उन्होंने पति माता को भी देवकोटि में रखा है। वैदिक परम्परा के पुराणों में माता का सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। जैन पुराणों में माता अत्यधिक श्रद्धेय थी तथा समाज में उसे विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया था। पद्म पुराण वर्णित है कि यथातः इस संसार में माता ही सर्वश्रेष्ठ बन्धु है। यद्यपि कन्या विषयक युक्ति में अन्तर्विरोध है तथापि स्त्रियों का समाज में प्रतिष्ठित स्थान थी पद्म पुराण में माता की महत्ता का वर्णन करती हुई इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी का कथन है कि हे माता! तू तीनों लोकों की कल्याण कारिणी माता है, तू ही मंगलकारी है, तू ही महादेवी है, तू ही पुण्यवती है और तू ही यशस्विनी है। उक्त पुराण में वर्णित है कि संसार में वह मनुष्य अत्यधिक पुण्यात्मा है, जो कि माता की विनय में तत्पर रहता है तथा किंकरभाव से उसकी सेवा करता है।¹

महापुराण के अनुसार सन्तानोत्पत्ति न होने पर कुल का नाश होता है और स्त्री को मुक्ति नहीं मिलती। उक्त पुराण में पुत्रोत्पत्ति का विशेष महत्व वर्णित है। यही कारण है कि संसार में साधारण मनुष्य के लिए पुत्र का जन्म भी हर्ष का कारण है। इसी कारण से अन्यत्र वर्णित है कि वस्तुतः स्त्रियाँ संसार की लता के समान हैं।²

यदि पुरुष के पुत्र नहीं हुआ तो इस पापी मनुष्य के लिये पुत्रहीन पापिनी स्त्रियों से क्या प्रयोजन है। पद्म पुराणों में पुत्र से बढ़कर प्रीति का और दूसरा स्थान नहीं है। महापुराण के अनुसार कन्या उत्पन्न होने पर परिवार में शोक छा जाता था। इसी पुराण में अन्यत्र वर्णित है कि यदि किसी के पुत्र नहीं हुआ तो जिस घर में स्त्री प्रवेश करती है और जिस घर में उत्पन्न हुई है, उन दिनों ही घरों में शोक छाया रहता है। यदि भाग्यहीन होने से कोई बन्ध्या हुई तो उसका गौरव नहीं रहता।³

महापुराण में यह उल्लिखित है कि गर्भिणी स्त्री का विशेष ध्यान रखा जाता था। दोहला को पूर्ण करना पति का परम कर्तव्य माना जाता था। जलक्रीड़ा, वनक्रीड़ा और कथा आदि द्वारा गर्भिणी का मनोविनोद किया जाता था। इस प्रकार दोहला पूर्ण होने पर उसका समस्त शरीर पुष्ट होता है और अकथनीय कान्ति एवं दीप्ति धारण करती थी।⁴ हरिवंश पुराण के अनुसार गर्भिणी स्त्रियों को दीक्षा-ग्रहण करने पर प्रतिबंध था। वे बच्चे के जन्म के बाद ही दीक्षा ले सकती थीं। महापुराण का 'अन्तर्वन्ती' शब्द गर्भिणी के लिए प्रयुक्त होने पर उसका महत्व बढ़ जाता है। पाण्डव पुराण में गर्भिणी की स्थिति का सुंदर चित्रण उपलब्ध है। गर्भिणी का मस्तक दुखना, चक्कर, आना, वमन होना, मुख सफेद उदर की त्रिवली नष्ट होना, पेट कठिन होना, अल्प भाषण, सुन्दर आंख, मृत्तिका भक्षण, स्तन सुन्दर, उन्नत पुट होना प्रमुख लक्षण हैं।⁵

जैन पुराणों में वर्णित है कि सन्तानोत्पत्ति से माता हृदय वात्सल्य से परिपूर्ण हो जाता है और स्तन से दूध ा झरने लगता है। महापुराण के अनुसार माता के लिए पुत्र सर्वाधिक स्नेहपात्र होता है। उससे बढ़कर प्रीति का और दूसरा स्थान नहीं है। महापुराण में वर्णित है कि उत्तम संतान प्रसव स्त्रियाँ अपने पति को आनन्दित करती हैं। उतना आनन्द लक्ष्मी भी नहीं दे सकती। उत्तम लताओं के समान उत्तम पुत्र प्रसवणी स्त्रियाँ प्रिय होती हैं। जैनतर ग्रन्थ महाभारत के अनुसार पुत्र अपनी माता को अपने पिता से अधिक मानता है।⁶

पुत्र अपनी माता को नहीं छोड़ सकता है। भले ही उसकी माता को सामाजिक एवं धार्मिक बहिष्कार क्यों न प्राप्त हो। जैनाचार्यों ने माताओं के पुत्र-प्रेम को पति के प्रेम से अधिक उच्च स्थान प्रदत्त किया है। पद्म पुराण में वर्णित है कि पति पर स्त्रियों का प्रेम विचलित भी हो सकता है। परन्तु अपने दूध से पुष्ट किये हुए पुत्रों पर वात्सल्य कभी विचलित नहीं होता है। महापुराण में उल्लिखित है कि माता को अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर परमानन्द की प्राप्ति होती है। संसार में माता को पुत्र वियोग से बढ़कर कोई अन्य वियोग नहीं होता।⁷

पद्म पुराण में वर्णित है कि पुत्र वियोग में माता को न आहार में, न शयन में, न दिन में, न रात्रि में थोड़ा भी आनन्द उपलब्ध होता है। वह पुत्र वियोग में कुररी के समान रुदन करती रहती है तथा अत्यन्त विह्वल होकर दोनों हाथों से छाती और सिर पीटती रहती है। उक्त पुराण में आगे कथित है कि पुत्र वियोगिनी निरन्तर उद्विग्न रहती है, नेत्र आंसुओं से परिपूर्ण रहते हैं।⁸ नव प्रसूता गाय के सामान पुत्र से मिलने के लिए व्याकुल रहती हैं। पुत्र के प्रति स्नेह प्रकट करने को लालायित रहती है और घोर सागर में डूबी रहती है। पुत्र वियोग में माताओं के बाल बिखरे रहते हैं तथा पृथ्वी पर लेटती रहती हैं।⁹

आजकल के आधुनिक वातावरण में मातायें अपने बच्चों को अपना दूध नहीं पिलाती, उसी तरह महापुराण के रचना काल में सम्भ्रांत परिवारों की मातायें भी अपने बच्चे को अपना दूध नहीं पिलाती थीं, अपितु धार्ये मां अपना दूध बच्चों को पिलाती थीं।¹⁰ इस प्रकार जैन पुराणों में माता को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ ग्रन्थों की सूची—

1. उल्लेख— वही, पृ. 118
2. मनु 2/145
3. वही 11/60
4. एस.एन. राय, वही, पृ. 263
5. पद्य 101/37
6. वही 80/70
7. महा 13/30 तुलनीय—गौतम 2/145 13/48
8. पद्य 81/79
9. महा 68/173
10. वही 59/20

Cite this Article

'डॉ० बिमलेश राम', "जैन पुराणों में माता का स्थान", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:7, July 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."